० सत्नाम साक्षी

राम मिलन पढ़ पाती

प्रवचन

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण - 1000 प्रतियां

उज्जैन कुम्भ मेला, मई-2016 सम्वत्-2073

प्रकाशक

सदगुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज

प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट, श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड, जयपुर

फोन : 0141-2372423-24

Email : amrapurdarbar@yahoo.com • Web. : www.premprakashpanth.com

ॐ
सत्नाम साक्षी

भूमिका

सतपुरुषों के मुखारविन्द से उच्चरित अमृतवाणी आनन्द और शान्ति प्रदायिनी होती है। अपने जीवन में अनुभूत सत्य को जब वे सत्संग प्रवचनों में सरल सरस भाषा में प्रकट करते हैं तो जिज्ञासु का हृदय प्रेमानन्द में मगन हो जाता है। सत्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का जीवन एकान्तप्रियता एवं सादगी से भरपूर था। आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज में अटूट आस्था एवं अनन्य गुरु भक्ति उनकी रग रग में समाई हुई थी।

जिस प्रकार से उनका जीवन अनंत सद्गुणों से सुवासित था उसी प्रकार उनकी वाणी भी मनमोहक थी। मधुर कण्ठ से जब वे भजन गीत गाते थे तो भगवान श्री कृष्ण की मुरली सा आनन्द अनुभव होता था। उनकी अमृतवाणी का लघु पुस्तिका के रूप में प्रकाशन हो रहा है। इसे पढ़कर एवं हृदयंगम कर अपने जीवन को सत्मार्ग में लगाएं।

भगत प्रकाश

अमरापुर स्थान, जयपुर

ॐ सत्नाम साक्षी

राम मिलन पढ़ पाती

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
अब की बिछड़ी नानका, फेरि मिलेगी कब।

भजन: ताप क्लेशा पाप मिटाओ, सुनकर सन्तनि बाती।
तुम पाओ झाती, मन एकान्ती, होवे शांती।
राम मिलन पढ़ पाती, रे तुम पाओ झाती।
राम मिलन पढ़ो पाती, मन एकान्ती, होवे शांती।।

प्रेम से बोलो हरे राम! सारे पूजने योग्य महात्मा मण्डल तथा प्रेमियो, सत्संगियो, गुरूमुखो अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करके, आसन बांधकर, अपने मन को सावधान करके, हर एक जीव, हर एक मनुष्य अपने मन को स्वयं समझावे। बार-बार समझावे, सत् शास्त्र, महात्माओं के वचनों, गुरू के वचनों पर विश्वास व निश्चय बन्धावे। भगवन्त के नाम में मन को विश्वास बन्धावें। ये ही भक्ति करनी है। प्राचीन हमारे ऋषि मुनि करके गये हैं। अभी कर रहे हैं और इसके बाद करेंगे। हे मेरे मन।

रे मन मेरा समझत नाहीं, बहुत तुझे समझाया है।
सत्य वस्तु से प्रीत न राखात, झूठ सदैव सुहाया है।
तीन काल जो तुम्हरा नाहीं, तिस पर दाव जमाया है।
कह टेऊँ इस मूर्खता कर, तुमने बहु दु:ख पाया है।

हे मेरे मन! तेरे को बहुत समझाया है, परन्तु समझता नहीं है, जो सत् वस्तु है, जो सत् पदार्थ है उससे तेरा प्रेम नहीं है। उसमें तेरा प्यार नहीं है। ''झूठ सदैव सुहाया है'' झूठ में तूने प्रीति रखी है, झूठ से प्रेम रखा है। झूठ में आसक्ति रखी है, वो दु:ख देकर के तुझे रुलायेगी, क्योंकि जब इसका बिछड़ना होगा तब तू रोयेगा। असत् पदार्थ कभी सत् नहीं होगा। एक दिन जरूर तुझे उनसे बिछड़ना पड़ेगा क्यों कि सच का कभी नाश नहीं होगा।

''आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच''।

साहब कहते है सच से प्रीत कर। हे मेरे मन! तू दु:खी क्यों हुआ।

''तीन काल जो ना कब तेरा''।

जो तीन काल–भूतकाल, भविष्य काल, वर्तमान काल में तेरा पदार्थ है ही नहीं। ''तिस पर दाव जमाया है।'' उसमें दाव जमाता है। परन्तु कभी दावा जमाता भी है तो कभी छोड़ता भी है, जब दु:ख आता है तो छोड़ देता है, और सुख आने पर

दावा जमाता है। एक तरफ हो। अगर दावा जमाता है तो बहादुर होकर दावा जमा। अगर छोड़ता है तो छोड़। एक तरफ हो। लाहौर में एक भगवान का भजन करने वाला छज्जू भगत हुआ है, बड़ा परोपकारी व सन्त सेवी था, गरीबों की भी बहुत सेवा करता था, एक दिन छज्जू भगत नदी से स्नान करके घर की ओर वापस आ रहा था तो रास्ते में एक हरिजन झाड़ू लगा रहा था, हरिजन ने रास्ते के दूसरी तरफ जब छज्जू भगत को देखा तो उसे पहचान गया, क्योंकि छज्जू भगत भक्ति, व सेवा के कारण प्रसिद्ध हो गया था, हरिजन ने विचार किया कहीं मेरी झाड़ू की धूल छज्जू भगत को ना लग जाए, इसलिए उसने छज्जू भगत को आवाज देकर कहा – हे छज्जू भगत एक तरफ हो जाओ – एक तरफ हो जाओ, क्यों कि मैं झाड़ू दे रहा हूं। छज्जू भगत ने हरिजन की आवाज सुनी और रस्ते के बीच में आकर खड़ा हो गया। हरिजन ने फिर आवाज लगाई हे छज्जू भगत! बहरा हो गया है क्या? जल्दी एक तरफ हो जा। छज्जू भगत बोला मेरे प्यारे! मैं ये ही सोच रहा हूं कि मैं किस तरफ हो जाऊं? दो रस्ते है – एक हैं गृहस्थ का, दूसरा है भक्ति का। मैं इसी बात की तलाश में हूं, और तूं मुझे कह रहा है कि एक तरफ हो जाओ, तो मैं किस तरफ जाऊं? पर अब मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं भक्ति मार्ग की तरफ हो रहा हूं उस दिन से उसने अपना सारा

व्यवहार छोड़ दिया और पाठशाला निकलवा करके सत्संग का दीबान लगा दिया।

हे मेरे मन! तू एक तरफ हो, या तो कह सब कुछ मैं हूं, या तो कह कि न तो मैं हूं न ही ये संसार है। एक तरफ हो तो जान छूटे। तू कभी किस तरफ, तो कभी किस तरफ हो जाता है। अगर अच्छा काम हुआ तो मैंने किया और अगर खराब काम हुआ तो भगवान ने करवाया। ऐसे नहीं। एक तरफ हो। प्रेम से बोलो हरे राम! हे मेरे मन!

''अगर आस है आनंद की तो, जग की इच्छा दहिये जी।''

ये दावा छोड़! प्रेम से बोलो हरे राम।

एक महात्मा एक चेले को साथ लेकर सैर पर निकले, दोनो सैर करते हुए किसी नदी के किनारे पर स्थित किसी राजा के नगर में पहुंचे। दोनों ने नदी के किनारे पर स्थित एक सुन्दर वृक्ष के नीचे स्नानादि किया। फिर महात्मा ने चेले से कहा चल हरि नारायण करके रोटी लेकर आएं, क्योंकि हरि नारायण करके मधुकरी अर्थात् रोटी मांगना शास्त्रों की आज्ञा है। बाकी पैसा और अन्य वस्तु मांगने से तो मरना अच्छा है। अब दोनों मधुकरी करके बाजार से भोजन लेकर आये और नदी के किनारे पर बैठकर भोजन किया। भोजन करने के बाद महात्मा जी ने शिष्य से कहा कि अब भोजन कर लिया है, अब तू अपने

सोने के लिए कोई कुटिया देखकर आ, क्योंकि वृक्षों से कभी धूप आती है तो कभी छाया इस कारण नींद नहीं आयेगी। शिष्य स्थान की खोज में निकला तो उसे एक राजा का महलात दिखाई दिया जिसका दरवाजा खुला पड़ा था, महलात बडा सुन्दर था, शिष्य ने महल के बारे में सारी बात आकर अपने गुरुदेव को बताई, गुरु ने कहा अगर ऐसी जगह है तो चल मुझे दिखा, दोनों महल के पास आये और देखा कि महल का दरवाजा खुला पड़ा है, राजा अन्दर नहीं था, क्यों कि राजा ग्यारह या साढ़े ग्याराह बजे के मध्य में आकर वहां आराम करता था, और महलात की देखभाल करने वाला पहरेदार भी किसी काम से बाहर चला गया था सो महल में कोई था ही नहीं, अब ये दोनों महल के अन्दर गये तो सेजा (पलंग) बिछी हुई थी, पंखे लगे हुए थे। महात्मा जी चेले से बोले कि तू उधर सो जा। चेला बोला महाराज ये तो महल है और ये भी पता नहीं है कि किसका है? महात्मा जी बोले पुत्र तू चिन्ता मत कर,

इस दुनिया में सिर्फ दो बातें याद रखना

1. कुछ बनना नहीं।
2. अपना नहीं करना अर्थात् दावा मत जमाना।

अगर दुनिया में इन दोनों बातों को याद रखोगा तो तीनों लोकों में किसी को ताकत नहीं जो तुझे कुछ कह सके।

एक बनो मत, दूसरा अपना नहीं करना। दावा भी मत जमाना कि यह मेरा है।

खबरदार! ये दोनों बातें भूलना मत। याद रखना।

महात्मा ने कहा बेटा अब भली सो जा। शिष्य कहने लगा स्वामी कोई दुःख तो नहीं देगा, कोई मारेगा तो नहीं। महात्मा बोले– किसी को ताकत ही नहीं है – जा जाकर सो जा। शिष्य गया और जाकर वजीर की सेजा पर सो गया और महात्मा जी अन्दर जाकर राजा के पलंग पर पंखें के बटन चलाकर सो गये। प्रभू की लीला पन्द्रह मिनट के बाद राजा और वजीर दोनों महल में आये। पहरेदार भी राजा को देखकर भागता हुआ महल में आया। राजा वजीर अन्दर घुसे तो देखा कि एक साधु सोया हुआ है वजीर की सेजा पर। वजीर ने पूछा पहरेदार से यह कौन है? पहरेदार कहने लगा मुझे कोई आवश्यक काम आ गया था सो मैं चला गया था यहां से बाहर सो मुझे भी पता नहीं कि ये कौन हैं? वजीर ने शिष्य से पूछा तू कौन है ?शिष्य उठकर बैठ गया और बोला मैं साधू हूं। वजीर कहने लगा अगर साधू है तो तूझे इतनी भी अक्ल नहीं कि जो दूसरे की सेजा पर सोता है तो वजीर ने शिष्य से कहा उठ यहां से। शिष्य कहने लगा मैं क्यू उठूं? अब वजीर और पहरेदार को आया गुस्सा उन्होंने थोड़े थप्पड़ और थोड़े धक्के देकर उस

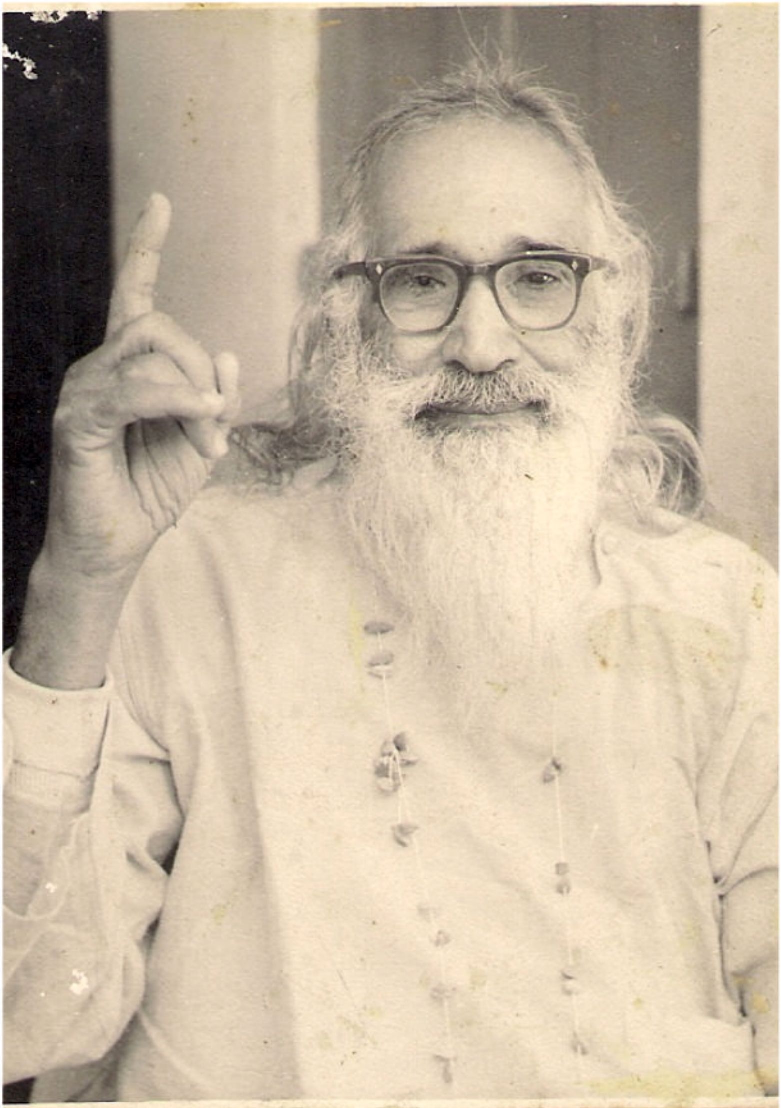

शिष्य को बाहर निकाल दिया? अब राजा गया अपने कक्ष में तो वहां भी एक साधू सोया पड़ा था, राजा ने पहरेदार से पूछा ये क्या है ? वह कहने लगा राजन मुझे माफ करें, मेरे को लाचारी कोई काम आ गया था। राजा ने पलंग पर सोये महात्मा से पूछा तू कौन है ? पर इस पर महात्मा जी ने बिना जवाब दिये अपना सिर दूसरी तरफ घुमा दिया। राजा ने फिर पूछा तुम कौन हो? महात्मा ने फिर अपना सिर दूसरी तरफ घुमा दिया। ये राजा बड़ा धर्मात्मा था क्योंकि पहले के राजा बड़े धर्मात्मा होते थे सो राजा ने विचार किया कोई दरवेश सन्त है भले सोया रहे। राजा ने वजीर से कहा, मैं बाहर जाकर तेरी सेजा पर सो जाता हूं और तू जाकर दूसरी जगह सो जा। अभी राजा सोया ही था कि महात्मा ने विचार किया कि पता नहीं चेले (शिष्य) का क्या हाल हुआ होगा। ऐसा विचार करके महात्मा महल से निकलने लगे, तभी वजीर की सेजा पर सोये राजा का ध्यान महात्मा की तरफ गया तो राजा महात्मा से पूछने लगा महाराज कहां जा रहे हो ? महात्मा कुछ बोले नहीं। राजा ने महात्मा से पूछा महाराज गर्मी बहुत है, क्या आप शर्बत पिओगे? कृपा करके पीते जाओ। महात्मा वहीं खड़े हो गये। राजा ने अपने वजीर से कहा जो चन्दन का शर्बत अपने पास पड़ा है वह एक गिलास संत को पिलाओ, गर्मी बहुत है। महात्मा ने चन्दन का शर्बत पिया तो

राजा ने फिर पूछा दूसरा गिलास चाहिए, पर सन्त कुछ बोले नहीं बिल्कुल चुप रहे। फिर राजा ने वजीर से कहा लगता है ये कोई मौनी महात्मा है। राजा ने महात्मा से पूछा आप आराम करेंगे ? पर महात्मा बिना जवाब दिये दरवाजे से बाहर निकल आये। जैसे ही महल से बहार आकर एक वृक्ष की तरफ उनका ध्यान गया तो उन्होंने अपने शिष्य को रोते हुए देखा, महात्मा जी शिष्य के पास आये और बोले-पुत्र तुम्हारा क्या हाल है ? शिष्य कहने लगा आज आपने मुझे मार पड़वाई है, राजा और वजीर ने मुझे बहुत मारा है, मेरा खून निकाल दिया है। मुझे जिस बात का भय था वही हुआ। मुझे पहले से डर लग रहा था। अब महात्मा जी कहने लगे पुत्र बता मैंने तेरे को दो बातें याद करने को कही थी तो तूने याद कीं? शिष्य पूछने लगा - महाराज कौनसी? महात्मा जी कहने लगे भुला दिया ना तूने उन दो बातों को, अच्छा बता तेरे को मारा कैसे ? सही बताना, किसी को ताकत ही नहीं जो कोई तुझे मार सके ? तो शिष्य कहने लगा जब हम सोये तो 10-15 मिनट गुजरे ही थे कि राजा और वजीर दोनों महल में आये, फिर वजीर ने मुझसे कहा कि तुम कौन हो? और उठ यहां से। तब महात्मा ने शिष्य से पूछा - फिर तूने क्या कहा? तब शिष्य कहने लगा - मैंने उनसे बोला कि मैं साधु हूं, तो महात्मा ने कहा आप साधु बने क्यों? तब महात्मा

जी कहने लगे पर साधु की तो सब पूजा करते है, पांव छूते हैं। साधु को मारेंगे कैसे ? महात्मा ने कहा लगता है अभी भी कुछ बात है, तो चेला (शिष्य) बताने लगा कि मुझसे वजीर ने कहा कि उठो यहां से, तो मैंने उससे कहा मैं क्यों उठूं? तो महात्मा जी ने कहा आपने दावा क्यों जमाया ये दावा ही तो दु:ख रूप है।

दुनिया की सब दावा छोड़े, लगन राम से लाइये रे।
जल्दी जा मन आत्म घर में, परम शांति को पाइये रे।

हे मेरे मन। अगर शांति को चाहता है तो जग की इच्छा, दावा छोड़। प्रेम से बोलो हरे राम। ''परम शांति को पाइये रे''। परम शांति को पा। वो शान्ति आये कहां से? पर ये सुख, शांति मांगनी नहीं। वह अपने ही अन्दर है। तू सच्चिदानन्द स्वरूप है। पर यह बात भूलकर तू बाहर ढूंढ़ रहा है। हे मेरे मन सुख शांति तेरे अन्दर ही है, मिलेगी कैसे?ऐसे नहीं मिलेगी। रस्ते के बिना कोई भी लक्ष्य पर नहीं पहुंच सकता।

जैसे – कोई पूना से बद्रीनारायण तीर्थ जाने की सोचे, और वो कभी बद्रीनारायण गया भी नहीं हो, और ना ही कभी देखा हो। और वो बिना रास्ता पूछे बद्रीनारायण के लिए निकल पड़े तो वह इस जन्म में तो बद्रीनारायण नहीं पहुंच सकेगा। परन्तु पूरब का कोई भाग हो तो पहुंचेगा, नहीं तो रस्ते में जो जंगल, पहाड़, नदी आदि पड़ेंगे तो उनके बीच में ही खत्म हो

जायेगा। पर जो रास्ता पूछकर जायेगा वह आज नहीं तो कल जरूर पहुंचेगा। अगर कोई बूढ़ा (वृद्ध) भी रस्ता पूछता हुआ जायेगा तो वह10-12 महिनों में जरूर पहुंच जायेगा, क्योंकि वो रास्ता पूछते-पूछते गया है। अत: हे मेंरे मन तू भी सन्तों, महात्माओं और शास्त्रों से रास्ता पूछता हुआ जा। भगवान कहां है ? भगवान के मिलने की चिट्ठी पढ़। महात्माओं से पूछ। पहले हमारे ऋषि, मुनि, महात्मा, परमपिता की चिट्ठी पत्रिका हमारे लिये लिखकर, रख के गये हैं। हे मुहिंजा प्यारा (हे मेंरे प्यारे) जब तुझे वैराग लगे। जब भगवान की प्यास लगे तब तू ऐसे ठोकरें मत खाना। हमारी चिट्ठी पढ़कर वैसे चलना। चिट्ठी पत्रिका पढ़कर, जैसे वेदान्त, शास्त्र, वेद भगवान, उपनिषदों आदि को पढ़कर आगे चलना। प्रेम से बोलो- हरे राम। पढ़ के देख। भगवान कहां हैं? तेरे अन्दर हैं। तूं ढूढ़ कहाँ रहा है, तलाश कैसे रहा है ? कैसे ?

मृग की नाभि है कस्तूरी, अपने से वह जानत दूरी।
खोजत बन में, मिलत न ताहीं।
रे मन मेरा भटकत काहीं, जो सुख चाहत सो तुझ माहीं।
रे मन मेरा भटकत काहीं।।

प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेंरे मन। तू भटक रहा है। अगर तू उस सुख को चाहता है। ''जो सुख चाहत सो तुझ माहीं।''

महात्मा कहने लगे, जिज्ञासु को, बाबा उस आनन्द सुख को प्राप्त कर, जो सुख तेरे भीतर है। वो सुख विषय, भोग पदार्थ में नहीं है। ये जो सुख है वो नित्य विभु व्यापक है, जिज्ञासु कहता है, प्रभु! मैं आपकी बात समझ गया। महात्मा जी पूछते हैं क्या समझा? जिज्ञासु बोलता है, प्रभु व्यापक तो माया है। ''साधो आय-जाय सब माया''। महात्मा कहने लगा-माया किसको कहता है? माया कहो, जगत कहो, संसार कहो, दुनिया कहो। क्या है? नाम, रूप माया है। नाम, रूप है। जो सुख नाम रूप आधार है ये सब माया ही है। ये माया ही नाम रूप का आधार है। मति न लखे, जिसको बुद्धि नहीं जान सकती। जो बुद्धि को पहचानता है अथवा श्रेष्ठ बुद्धि उसको महसूस करती है। बुद्धि को भी जो पहचानता है, बुद्धि साक्षी का प्रकाश पा करके साक्षी का दर्शन करेगी। ''सो मैं शुद्ध अपार यह मेरा स्वरूप है, हे पुत्र वही तेरा भी स्वरूप है। तू कोई और नहीं है। ''जो सुख चाहत सो तुझ माहीं'' वो तेरे अन्दर है तेरा स्वरूप है। ''रे मन मेरा भटकत काहीं।।'' तूं कैसे भटक रहा है। किस तरह से भटक रहा है। ''मृग की नाभि है कस्तूरी''। जैसे एक मृग होता है। मृग कहो, कुरंग कहो। उसकी नाभि (दुन) में कस्तूरी होती है। सुबह को उसको खुशबू आती है तो वह सोचता है कि खुशबू वाला घास खाऊं। फिर बन में घास में सूंघता है। सूंघते-सूंघते उसे भूख

लगती है तो फिर थोड़ा घास खाता है। सारा दिन वो उस सुगन्ध की तलाश में गंवा देता है पर जब शाम होती है तो वो निराश होकर रह जाता है, उसे घास से कुछ प्राप्त नहीं होता है। वह सुगन्ध है उसकी नाभि में और ढूंढता है बन में, घास और पत्तों में। इसलिए हे मेरे मन तू हिरण की तरह इस संसार रूपी बन में है। ये ऐसा तो गहरा बन है। जिसमें अनन्त जीव गुम हैं। पताा नहीं, कहां किसको खोज रहे हैं। शरीर का ख्याल नहीं कहां पर है? पता नहीं कहां घूमते हैं? सुख ढूंढते हैं मछली मांस में, जुआ में, शराब में। सिनेमा में ढूंढ रहे हैं, पुत्र में, धन में, शरीर में ढूंढ रहे हैं। इधर-उधर ढूढ रहे है। पर ये सुख इधर-उधर ढूंढने से प्राप्त नहीं होगा। ''ढूंढ़त बन में मिलत न ताहीं।'' कैसे मिले? हे मेरे मन! तेरे अन्दर है, मिलेगा कैसे? साधन से। साधन के बिना कोई वस्तु हाथ नहीं आयेगी। याद करना। साधन हमारे ऋषि, मुनि, महात्मा तैयार करके गये हैं। अपने को केवल रस्ता लेना है।''ताप क्लेशा पाप मिटाओ''। तीन प्रकार के ताप-अध्यात्म, आधिभौतिक, आधिदैविक, आधि, व्याधि, उपाधि हैं।

प्रेम से बोलो हरे राम। क्लेशा- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष-अभिनिवेश इन सबको मिटाओ। सुनकर संतन बाती। महात्माओं की बात सुन तो सही। हे मेरे मन तू बात सुनना चाहता ही नहीं है। इस दुनिया के अन्दर पांच प्रकार के

मनुष्य देखने में आते हैं। आप भी देखना इधर पुणे में, आप भी उनके अन्दर आते हो। परन्तु आप कौन से नम्बर में आयेंगे। आप उस पर विचार करना।

1. एक वो मनुष्य है जो संतों की बात, महात्माओं की बात सुनना चाहते ही नहीं हैं। बाकी सिनेमा हो, नाटक हो, घोड़ा हो, घोड़े दौड़वाते हैं। सच्ची करके पूछो मती मार गई है। घोड़ों का खाना खराब तो मुनष्य का भी खाना खराब,इससे मिलेगा क्या? आप कहोगे कि महाराज! उनको लाखों रुपये मिलते हैं। घोड़ों को भी मारते हैं। सच्ची बताये अगर यह प्लाट गरीबों को दे तो एक शहर बन जावें। सच्ची करके पूछो। रविवार को देखना कितनी भीड़ लगती है। पर अगर कोई महात्मा वेदान्त की कथा करे तो उधर जाकर देखना कि वहां कितनी भीड़ है ये सब क्या है? प्रेम से बोलो हरे राम। सुनना तो चाहते ही नहीं है बाकी नाटक, झगड़ा, सिनेमा, तमाशा हो तो वह बहुत अच्छा है।

2. दूसरे चाहते हैं कि महात्माओं के सत्संग कथा सुनें। परन्तु फुरसत नहीं है। महाराज सभी चीज महंगी हो गई। क्या करें? हम बाल-बच्चों की करें कि या फिर आपके सत्संग की करें, हम फंस गये हैं। पर अगर

आपको किसी ने फंसाया है तो तुम स्वयं छूटने में समर्थ हो, पर अगर तुम स्वयं फंसे हो तो भगवान को भी ताकत नहीं है कि आपको छुड़ा पाए। बात बताऊँ सच्ची। महाराज! फुरसत नहीं है भला। कब फुरसत होगी। हरि ....

जब तक है जिन्दगी, फुर्सत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रीत कर लो श्री राम से।।

फुरसत होगी नहीं कुछ समय निकालो। भगवान से प्रीत करो। प्रेम से बोलो हरे राम। गुरु महाराज ने कहा–

इसी दुनिया का काम सभोई, ना कब होगा पूरा जी।
बड़े बहादुर अनन्त चल गये, छोड़ के बीच अधूरा जी।
चिंरजीवी, पुनि इच्छाचारी, काल किया चकचूरा जी
कह टेऊँ सब काम तजे तुम, नाम जपो नित नूरा जी।।

"इसी दुनिया का काम सभोई, ना कब होगा पूरा जी।" पूरा नहीं होगा। "बड़े बहादुर अनन्त चल गये, छोड़ के बीच अधूरा जी।" रावण जैसे सभी अधूरे में, चले गये। किसी ने पूरा नहीं किया।

"धंधा किसे न साधिया, धंधे साध्या जग।"
सेई गुरमुख बाचिया जिन पकडी हर की पग।।"

धंधे ने सबको पूरा कर दिया, पर धंधा पूरा नहीं हुआ। नौकरी वालों को नौकरी ने पूरा कर दिया। नौकरी पूरी नहीं कर सके। चिंरजीवी, इच्छाचारी काल उन्हें भी खा गया है। हे मेरे मन। निश्चय करो। प्रभु का भजन करो। प्रेम से बोलो हरे राम। फुरसत नहीं है। भला कब फुरसत मिलेगी। बताओ। प्रेम से बोलो हरे राम।

3. तीसरे मनुष्य आते हैं कथा में, परन्तु संतों के वचन, सत्संग समझ नहीं पाते हैं। वो स्त्री-पुरुष इधर उधर खड़े होकर चले जाते हैं। जो सत्संग के बीच चले गये यानि उनको कथा समझ में आयी ही नहीं। कहने लगे महाराज! कथा तो समझ आयी परन्तु उनको काम था बोले- नहीं, काम नहीं था। समझ में नहीं आयी। जब तक बात समझ में नहीं आयेगी तब तक उसमें से रस और आनन्द नहीं आयेगा। समझते ही नहीं हैं। आप कहेंगे कि महाराज! उनको काम था। आपको पता नहीं, जिनको यह बात समझ में आयी उन राजाओं ने राजायी (राज्य) छोड़ दी।

गोपीचन्द भरथरी राजा, सिर पर डारी धूर
मस्ताना मन क्या ढूंढे - घर दूर''

गोपीचन्द भरथरी कई अन्य राजाओं ने राज छोड़ दिया, क्योंकि उनको बात समझ में आ गई। जिन्हें नहीं आई वे सत्संग छोड़कर चले गये। ये कितने हुये तीन

4. चौथे आते हैं काम छोड़ के, आकर के बैठते हैं, श्रवण करते हैं, सुनते हैं, समझते हैं, परन्तु कर नहीं सकते हैं। जितने स्त्री-पुरुष अभी बैठे हो। अभी विचार करना। मछली-मांस खाना, शराब पीना, सिगरेट पीना, सिनेमा जाना, देती-लेती (दहेज) पैसा लेना, बोली करना, अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोलना, बिना कारण किसी जीव को दु:ख देना, ये बातें कोई अच्छी हैं? एक तो उठकर कहे कि अच्छी हैं, डरना मत। फिर क्या आप सभी ने छोड़ दिया है? नहीं छोड़ा है। अत: समझते हैं, परन्तु छोड़ नहीं सकते हैं। ये चौथे लोग। समझते है। परन्तु कर नहीं सकते। परन्तु कारण क्या है? ये महात्माओं, गुरुओं से पूछना चाहिए। समझते भी हैं, परन्तु कर नहीं सकते। ये बीच में कौन सा रोला (दिक्कत) है। ये महात्मा, सत्गुरु रोला निकाल देंगे। प्रेम से बोलो हरे राम।

5. पांचवें प्रेमी बड़े श्रद्धा, प्रेम से आते हैं। महात्माओं के सत्संग में बैठते है। श्रवण करके, मनन करते हैं,

निदध्यासन करते हैं। विश्वास रख के लोक परलोक बनाकर के मुक्त हो जाते हैं। हे मेरे मन! ''ताप क्लेशा पाप मिटाओ, सुनकर संतन बाती''। महात्माओं की बात सुन। प्रेम से बोलो हरे राम। ये साधन कर। क्या कर?

चारों साधन तुमहीं साधो, ध्यान धरो दिन राती रे
तुम पाओ ज्ञाती, मन एकान्ती, होवे शांती।
राम मिलन पढ़ पाती।

प्रेम से बोलो हरे राम। ''चारों साधन तुमही साधो, ध्यान धरो दिन राती।'' भगवान के मिलने के, मोक्ष के दो रास्ते हैं। याद करना। रास्ता कहो, मार्ग कहो। दो रास्ते है। 1. ज्ञान मार्ग 2. योग मार्ग। फल दोनों का एक है किसी को ज्ञान मार्ग और किसी को योग मार्ग ठीक लगता है। रास्ते हैं दो। यह गुरु महाराज प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के छन्दावली में लिखा है – हरि :

ज्ञान योग ये दोनों मार्ग, अमर लोक को जाते हैं।
जो जन जिस मार्ग से जावत, आत्म घर को पाते हैं।।
एक बार उस घर में जाकर, फेर लौट नहीं आते हैं।
कह टेऊँ सब बंधन तोड़े, निज स्वरूप समाते हैं।।

ज्ञान, योग। ये दोनों मार्ग अमर लोक को जाते हैं। अमरापुर कहो, अमरलोक एक देश है, उसमें एक अमरापुर है।

जितने आप सब बैठे हो अमरापुर चलोगे? तो आप पूछोगे महाराज! उधर क्या है?पहले आप टिकट लो। प्रेम से बोलो हरे राम। टिकट तीन प्रकार के हैं, रास्ते तीन प्रकार के है :- 1. पैदल 2. गाड़ी 3. हवाई जहाज, आप किसमें चलोगे? हवाई जहाज में। हवाई जहाज में कम से कम तीन बातें चाहिए। पहले देखो वो तीनों बाते हमारे में हैं? पहले तो उसका किराया ज्यादा है। दूसरा बीमार को नहीं चढ़ायेंगे। अत: व्यक्ति को ठीक होना चाहिए। तीसरा-कानों में रूई डालेंगे, आवाज ज्यादा है। प्रेम से बोलो हरे राम। ये तीनों बाते हैं तेरे में? किराया माने निश्चय, विश्वास, श्रद्धा, सत् शास्त्र, गुरुओं में महात्माओं में, भगवान में। और बीमार माना-कनिष्ठ, मध्यम नहीं, उतम बुद्धि वाला बैठ सकेगा। तीसरा कानों में रूई, चाहे कोई गालियां दे, कोई कुछ भी कहे, एकदम चुप रहना है, भले कोई निन्दा करे, चाहे कोई अपजस करे, कोई जस करे, कानों में डालो रूई। फिर बिठायेंगे। गर्मी के दिनों में चैत्र मेले के बाद गुरु महाराज थोड़े महिने उधर टण्डेआदम में ही रहते थे। चौमासे व सर्दियों में, सद्गुरु महाराज की मण्डली सफर पर निकलती थी। उस समय दास गुरु महाराज जी से आज्ञा पाकर हरिद्वार और ऋषिकेश की ओर निकल जाता था।

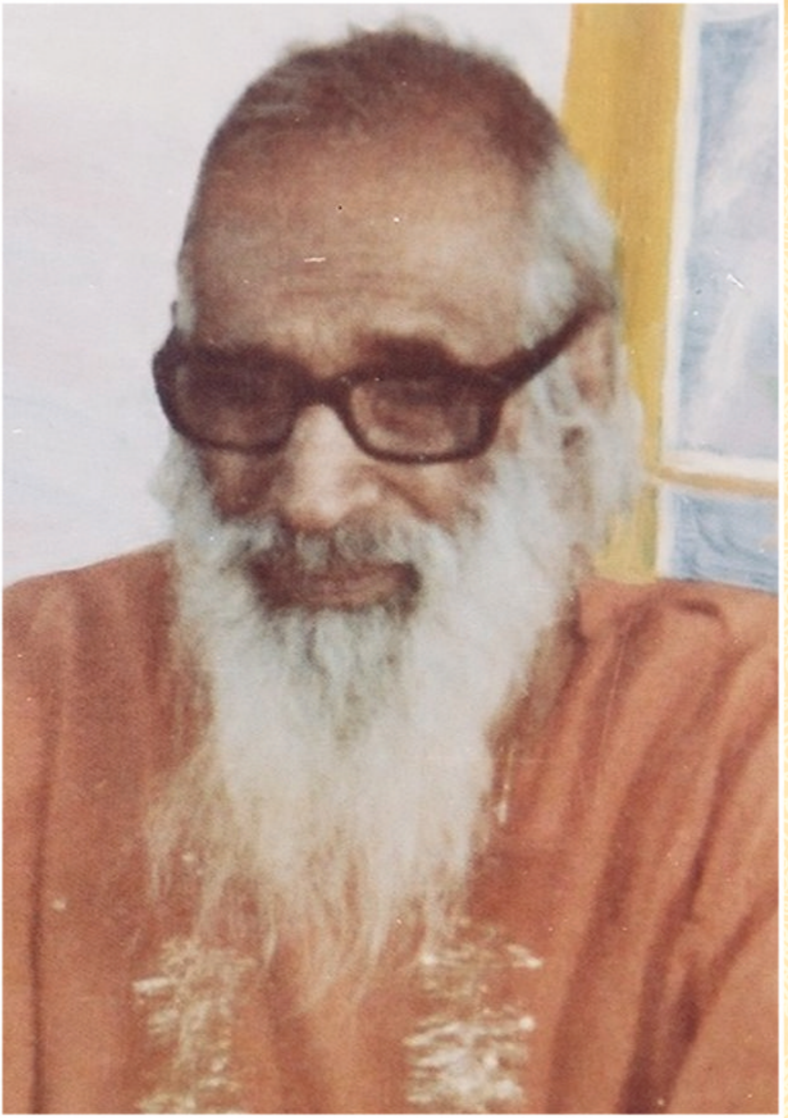

एक समय मैं मुल्तान में ज्ञान थल्ले के स्वामी पूरणदास के पास रुका जो कि काले कपड़े पहनते थे और वारी (रेत) पर बैठते थे, वो सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रीतम थे। एक बार उनके यहां शाम को सत्संग हुआ, वहां पर एक महात्मा बाहर से आये हुए थे जिन्होंने कश्मीर की बहुत महिमा गायी। कश्मीर की ऐसी महिमा गायी कि कश्मीर की महिमा करते हुए सत्संग से उसका प्रतिपादन किया। बोले ये सत्संग ही कश्मीर है, तो मैंने ऐसा विचार किया कि कश्मीर देखना चाहिए। जितने प्रेमी बैठे हो। आप भी देखो कि अमरापुर में है क्या? अमरापुर इतना अच्छा है कि आप को भी ये बात सुनकर खुशी होगी।

अमरापुर निज धाम हमारा, पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा।
जिसमें कोई वर्ण न जाती, भेख पंथ की नहिं उत्पाती,
ऊंच नीच का नहीं विचारा, अमरापुर निज धाम हमारा,
पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा।

''जिसमें कोई वर्ण न ज़ाती।'' सब तरफ वर्ण आश्रम के झगड़े लगे हुये हैं। उधर वर्ण जाती नहीं हैं। वो कहे मेरा पंथ बड़ा है, वो कहे मेरा पंथ बड़ा है। प्रेम से बोलो हरे राम। ''ऊँच-नीच का नहीं विचारा।'' ये ऊँचा है ब्राह्मण, ये शूद्र है, ऐसा वहां नहीं है।

जहां न धरनी पवन अकाशा, सूर्य चन्द्र का नहिं प्रकाशा।
दिन नहीं रजनी तम न उजियारा
अमरापुर निज धाम हमारा, पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा।

धरती, आकाश उधर नहीं है। न कोई जमीन है, न कोई आकाश है, न कोई सूर्य है, न ही वहां चन्द्र का प्रकाश है। ''दिन न रजनी'' न वहां कोई दिन है, न ही कोई रात है, न तम है, न कोई उजियारा, न कोई अंधेरा है, न कोई प्रकाश है। बाकी क्या है? ''धर्मराज न जावत ताहीं।'' प्रेम से बोलो हरे राम। ''जन्म-मरण का दू:ख न जाहीं।'' जहां जन्म -मरण का दु:ख नहीं है। ''घन-बिन बरसत अमृत धारा।।'' घन माना बादल। बादल के बिना अमृत की धारा बरस रही है। प्रेम से बोलो हरे राम।

कह टेऊँ वहां जो जन जावत, सो फिर वापस लौट न आवत।
अद्भुत ऐसा खेल अपारा, अमरापुर निज धाम हमारा।
पहुंचत वहां कोई गुर का प्यारा, अमरापुर ....।

गुरू महाराज कहते हैं। उधर जो कोई जायेगा वह फिर वापस लौटकर नहीं आयेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। उस अमरापुर से बढ़कर कोई मुल्क हो तो बात करें, पर उससे अधिक कुछ है ही नहीं। प्रेम से बोलो हरे राम। ''अद्भुत ऐसा खेल अपारा।'' बड़ा खेल है। प्रेम से बोलो हरे राम। ''अमरापुर

निज धाम हमारा'' अमर लोक में है अमरापुर। उसके वास्ते दो मार्ग हैं। 1. ज्ञान मार्ग 2. योग मार्ग।

ज्ञान मार्ग की 11 साधन 7 भूमिकायें मुख्य है। बड़ा रास्ता बम्बई को जाता है। बम्बई से जायेगा दिल्ली, फिर दिल्ली से कई रास्ते निकलते जायेंगे। बड़ा रास्ता है बम्बई का। उसमें से कई रास्ते निकल खत्म होते जायेंगे। बाकी रास्ते हैं दो। ज्ञान और योग, ज्ञान मार्ग की 11 साधन 7 भूमिकायें मुख्य हैं। इसमें से कई रास्ते खत्म होते जाते हैं जैसे कर्म उपासना। दूसरा योग मार्ग। ये चार प्रकार के हैं - 1. राज योग 2. लय योग 3. मन्तर योग 4. हठ योग। मुख्य ये दोनों मार्ग उधर जाते हैं। दोनों का फल एक ही निकलता है। जितनें प्रेमी बैठे हो। ये भजन इधर रखते हैं।

''चारों साधन तुम ही साधो।'' पहले चार साधन जो सम्पन्न है। वो उतम जिज्ञासु हैं। ये वेदान्त कहता है।

मल विक्षेप जांको नहीं, किन्तु एक अज्ञान।
एह चौ साधन सहित नर , सो अधिकृत मति मान।।

जिसका मल विक्षेप का पर्दा दूर हो गया है। चारों साधन सम्पन्न है, वो आत्म ज्ञान का अधिकारी है। जितने प्रेमी बैठे हो, सत्संग में तीनों प्रकार के लोग आते हैं।

1. उत्तम 2. मध्यम 3. कनिष्ठ।

जो चार वचन सुने हैं। उसका विचार करना। किसी को शंका हो तो वो भली कहे। समाधान होगा। तब सन्त बसन्तराम जी ने कहा, सांई! (स्वामी जी) मैं शंका करूं? तो सद्गुरु महाराज ने हंसते हुए कहा, आप नहीं, आप शंका करोगे तो बात दूसरी हो जायेगी। बताऊँ कैसे? एक बार दीवाली का दिन था, दो हलवाईयों की बड़ी मिठाई की दुकानें थी। एक की रास्ते के इस तरफ, दूसरे की दूसरी तरफ, दोनों ने अपनी मिठाईयों को सुन्दर पन्नियां लगाकर व रंग लगाकर सजा रखा था, अब दोनों हलवाई ग्राहकों को रिझाने के चक्कर में मिठाई का मूल्य घटाने लगे। एक ने मिठाई सस्ती की तो दूसरे ने उससे भी अधिक सस्ती कर दी, अब दोनों को घाटा पड़ने लगा, तब एक हलवाई आया दूसरे के पास और समझाने लगा-हम दोनों को घाटा पड़ रहा है, अत: अपनी दोनों मिठाई इतनी सस्ती नहीं करते हैं। अब दूसरे हलवाई को आया गुस्सा उसने कहा, तू मुझे समझाता है, खुद नहीं समझता, और क्रोध में तो अपने माता-पिता की सुधि नहीं रहती है, तो उसने गुस्से में आकर सामने वाली मिठाई की दुकान पर मिठाई फेंकी, अब तो सामने हलवाई को भी गुस्सा आ गया तो उसने भी एक-एक करके लड्डू, मिठाई, जलेबी फेंकना चालू किया, अब तो दोनों ही तरफ से मिठाई की बरसात होने लगी, अब तो गरीब फकीर

लोग मिठाईयां खाने लगे, लोगों को मुफ्त में मिठाई मिल रही थी, तभी इतने में एक सज्जन पुरुष वहां से गुजरा तो उसने दोनों हलवाईयों को समझाया कि तुम मिठाई का भाव एक जैसा रखो, फिर आप दोनों को घाटा नहीं पड़ेगा, पर अगर ऐसे ही लड़ते रहे तो सारी मिठाई ये रास्ते के लोग ही खा जायेंगे, उन दोनों को ऐसा समझाकर उस सज्जन ने उन दोनों हलवाईयों को मना लिया, दोनों उसकी बात समझ गये और लडाई छोड़ दी, पर रस्ते पर खड़े गरीब लोग हलवाईयों से पूछने लगे तुम फिर कब लड़ोगे जो हमें फिर मुफ्त मिठाई खाने को मिले। ऐसी ही अगर सन्त बसन्तराम शंका करेंगें तो उत्तम-जिज्ञासू तो प्रसन्न होंगे कि सन्त आपस में प्रश्न-उत्तर कर रहे हैं तो उन्हें लाभ होगा, परन्तु जिन्हें ज्ञान नहीं है वह कहेंगे कि सन्त आपस में लड़ रहे हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। जो चार वचन सुने हैं, उनका विचार करना। परमात्मा आप सबकी भली करेंगे।